डायरी

बीच में स्कूल छोड़ने वाले बच्चे

❑ विकास शर्मा

जयपुर के फागी विकास खंड में कार्यरत संस्था विशाखा इन्स्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेट स्टडीज ससेक्स (यू.के.) के साथ मिलकर शिक्षा में जाति और लैंगिक भेदभाव और उसके प्रभावों पर अध्ययन कर रही है । इस अध्ययन में राजस्थान के टोंक व गंगानगर जिलों की कुछ दलित बहुल आबादियों को अध्ययन के लिए चुना गया है । यह इस अध्ययन की शोध टीम के एक सदस्य की फील्ड वर्क डायरी के कुछ अंश हैं जिनमें बच्चों के बीच में स्कूल छोड़ने के कुछ कारणों का पता चलता है । डायरी में संदर्भित स्कूल गंगानगर की दलित आबादी से घिरा एक सरकारी स्कूल है । इन अनुभवों में यह भी देखा जा सकता है कि सरकारी स्कूल अपनी ओर से बच्चों को जोड़े रखने का शायद ही कुछ प्रयास करते हैं ।

27 नवम्बर, 2001

यहां मैं बृजमोहन के पास गया । बृजमोहन 9वीं कक्षा का छात्र है । बृजमोहन को मैंने बताया कि 14 से 16 वर्ष तक के बच्चों से बात करनी है जो या तो स्कूल नहीं गये या स्कूल बीच में ही छोड़ दी है । तब बृजमोहन मुझे एक घर में ले गया । बच्चे की मां को मैंने अपने आने का प्रयोजन बताया तो उसकी माँ स्कूल वालों को गालियाँ देने लगी । कहने लगी, ''कुर्सी तोड़ने के भी सरकार पैसे देती है । हमको सारे दिन काम करने पर भी पेट भरने जितने पैसे नहीं मिलते (गाली) । ऊपर से मारते हैं, स्कूल से बिना कारण निकाल देते हैं ।''

मैंने थोड़ी बात घुमानी चाही और बच्चे के पिताजी क्या काम करते हैं ? कहाँ करते हैं ? आदि पूछने लगा । इस दौरान बच्चे का नाम पता लगा । उसका नाम सुरेन्द्र था । सुरेन्द्र पानी भर रहा था। बाहर से पानी की बाल्टी लाकर गारे में (मिट्टी भीगी हुई) डाल रहा था। इससे इनको घर बनाना है । अभी एक ही कमरा है इनके पास। सुरेन्द्र की माँ ने बताया कि थोड़े टाइम पहले नगर पालिका वालों ने सारे मकान तोड़ दिए थे ।

सुरेन्द्र को पास बुलाकर बैठाया । सुरेन्द्र कुछ भी नहीं बोलता है । न नजर उठाकर देखता है । सुरेन्द्र की माँ ने बताया कि यह किसी से भी नहीं बोलता । बहुत ही कम बोलता है । बिना काम घर से बाहर भी नहीं जाता है । इसको तो लड़कियाँ भी छेड़ जाती हैं । कुछ भी कह जाती हैं, तब भी वह नहीं बोलता।

सुरेन्द्र से सर्वे पर बात की । सुरेन्द्र ने हाँ/नहीं में ही अधिकांश जबाव दिए । स्कूल क्यों छोड़ा पर सुरेन्द्र बोला, ''मैडम ने बीड़ी का झूठा नाम लगाया था जी । थैला लेकर घर भेज दिया।'' इसके बाद सुरेन्द्र तो कुछ नहीं बोला पर सुरेन्द्र की माँ ने बताया कि बीड़ी पीने का स्कूल की मैडम ने झूठा नाम लगाया । कहा कि सबको बीड़ी पीना सिखाएगा इसलिए चला जा । फिर यह स्कूल से लगातार अनुपस्थित रहा ।

सुरेन्द्र के यहाँ से बाहर आए तो मुझे बृजमोहन वाल्मीकि ने बताया कि सुरेन्द्र ठीक लड़का है। किसी को भी जवाब नहीं देता एवं बीड़ी भी नहीं पीता, पता नहीं मैडम को क्यों शक हुआ ?

यहाँ से बृजमोहन मुझे करणी सिंह मार्ग पर ही नरेश के घर की तरफ लाया, नरेश ने भी पढ़ाई छोड़ी थी पर नरेश की उम्र लगभग 19 वर्ष की थी, इसलिए यूँ ही बातचीत करने लगे । तभी नरेश ने एक रिक्शा रुकवाया और मुझसे कहा, ''इससे बात कर लो जी इसने भी पढ़ाई छोड़ी है ।'' रिक्शा जो बालक चला रहा था वह संजय था। संजय मेरे पास आकर बोला, ''क्या बात है ? कहाँ, जाना है ?'' नरेश ने संजय की बात नहीं सुनी और बोला कि ये जयपुर से आए हैं एवं तुमसे थोड़ी देर बात करेंगे । संजय पास की दीवार पर बैठ गया । मैं पास में रखी ईटों पर बैठ गया । नरेश भी सामने दीवार पर बैठ गया । बृजमोहन मेरे पास बैठ गया । संजय ने बताया कि क्यों स्कूल छोड़ना पड़ा । इन बच्चों से मिलकर लगा कि समय कितना ताकतवर होता है । घर की जिम्मेदारी संभालने की और घर चलाने की कोई उम्र नहीं होती । संजय लगभग 11 वर्ष का था तब पिताजी बीमार हुए । उनकी लगातार चलने वाली मजदूरी की आमदनी बन्द हो गई । संजय उस समय कभी स्कूल जाता, कभी मां को मजदूरी मिल जाती तो छोटे भाई-बहनों को रखने के लिए घर पर ही रुक जाता । कभी-कभार मिलने वाली मजदूरी भी जब घर को नहीं चला पाई तो अन्ततः संजय को स्कूल से छुड़ा कर चाय की दुकान पर लगाया । संजय सुबह 6 बजे से शाम के 7-8 बजे तक कप प्लेट धोता था । संजय ने 3 वर्ष तक

चाय की दुकान पर काम किया । अब कुछ समय से रिक्शा चलाता है । रिक्शा संजय का नहीं है । रिक्शा किराए पर लेता है जिसका किराया 13 रूपये एक दिन का है । संजय बताता है कि कभी 70-80 रुपये भी हो जाते हैं कभी 10 रुपये ही बचते हैं पर काम चल जाता है । बृजमोहन को मैं कल फिर आने को कहता हूं ।

28 नवम्बर, 2001

आज मैं सीधा बृजमोहन के पास गया पर बृजमोहन स्कूल में था । बृजमोहन के घर के पास ही नरेश का घर है । यहां से नरेश के पास गया एवं नरेश को बताया कि मुझे पढ़ाई अधूरी छोड़ने वालों से या जो स्कूल ही नहीं गए ऐसे 14-16 वर्ष तक के बच्चों से बात करनी है। तो नरेश ने कहा कि एक तो आप मेरी बहन से ही बात कर लो एवं भाई भी छोटा है उससे भी कर लो । भाई घर पर नहीं था इसलिए मैंने नरेश की बहन से बात की । बहन की उम्र 14 वर्ष थी एवं दूसरी कक्षा तक ही पढ़ी थी । इन्दुरानी कक्षा दो तक नियमित स्कूल जाती थी । इन्दुरानी ने पढ़ाई छोड़ने का कारण तो नहीं बताया पर इन्दु की माँ ने बताया कि इन्दु की बड़ी बहन की शादी थी तो उसको ससुराल वालों ने मार डाला (हत्या कर दी) तो हमने केस किया था, उसमें ही सारे पैसे लग गए । घर का सारा पैसा केस में ही लग गया तो इन्दु की पढ़ाई छुड़ा दी । इन्दु की माँ ने बताया कि बड़ी बेटी के मरने के बाद सारा घर ही अव्यवस्थित हो गया । छोटा लड़का भी सारे दिन आवारा फिरता है ।

इन्दु से बात करके मैं बृजमोहन के घर गया । अभी बृजमोहन आया नहीं था इसलिए मैं बृजमोहन के बड़े भाई के पास ही बैठ गया एवं बातचीत की । उनके पूछने पर बताया कि हम क्या कर रहे हैं, तब वे बोले कि प्रेमा का भी फार्म भर लो । प्रेमा इनकी छोटी बहन है । हम दोनों, प्रेमा एवं प्रेमा की मम्मी अन्दर बैठी थी वही चले गए । प्रेमा ने तीसरी कक्षा में पढ़ाई छोड़ी थी । प्रेमा अब भी नहीं पढ़ना चाहती ।

स्कूल की अध्यापिका ने 2-3 बार प्रेमा को मारा था। प्रेमा होमवर्क पूरा करके ले जाना भूल जाती थी । अध्यापिका की पिटाई के डर ने अन्ततः प्रेमा को स्कूल छुड़ा दिया । प्रेमा के घर वालों ने समझाया था फिर भी प्रेमा स्कूल नहीं गई । प्रेमा कहती है - ''पढ़कर क्या कर लेंगे?''

प्रेमा से बातचीत के बीच ही बृजमोहन आ गया । प्रेमा से बात करने हम बैठे ही थे कि पास में ही रहने वाली एक महिला ने आकर कहा कि हमारी लक्ष्मी का भी भरवा फार्म । वह भी नहीं पढ़ रही । तब बृजमोहन ने मुझसे कहा कि लक्ष्मी भी प्रेमा के साथ की ही लड़की है । इसका भी फार्म भर लो। महिला अपनी लड़की को वहीं बृजमोहन के घर ही ले आई । यहीं बृजमोहन के घर पर बैठ कर ही मैंने लक्ष्मी से बात की । लक्ष्मी की माँ सुबह 6 बजे से 10-11 बजे तक कुछ घरों में सफाई करने जाती है एवं लक्ष्मी को भी अपने साथ ले जाती है । लक्ष्मी ने कहा कि अब बच्चों को पढ़ने जाते देखकर इच्छा होती है कि पढ़ें पर इतने बड़े तीसरी कक्षा में बैठने में शर्म आती है । लक्ष्मी ने बताया कि हमें देर से जाने पर स्कूल से वापिस घर भेज देते थे ।

लक्ष्मी बताती है कि खाली समय में दोपहर को छोटे बच्चों के साथ खेल लेती है । मैंने पूछा, ''बच्चों के साथ गोलियाँ खेलने में शर्म नहीं आती ?'' तब लक्ष्मी बोली - ''कोई बाहर थोड़ी खेलते हैं जी, घर के सामने ही तो खेलते हैं ।''

लक्ष्मी से बात करके मैं एवं बृजमोहन बाहर आए । बृजमोहन की जानकारी में और कोई था नहीं इसलिए मैदान में खेलने आने वाले लड़कों से बात करना तय किया । मैदान में अधिक बच्चे नहीं थे । शायद शाम होने से घर चले गए थे नहीं तो यहाँ लगभग 50 से अधिक बच्चे खेलते मिल जाते थे ।

मैदान के पास की दीवार पर एक लड़का बैठा था । डेनिम जींस एवं हरे रंग की टी-शर्ट पहने । इसके लम्बे बाल थे । मैंने बृजमोहन से इसके बारे में पूछा तो बृजमोहन ने कहा कि आप ही बात कर लो भैया, मैं इससे कम ही बोलता हूं ।

मैंने उसके पास जाकर बात शुरू की एवं अपना परिचय दिया। लड़के ने पूछने पर बताया कि उसका नाम मेहराज खान है एवं वह खेलता नहीं है, खेलना मेहराज को अच्छा नहीं लगता । मेहराज कभी-कभी यूं ही आ कर यहां बैठ जाता है। मेहराज 16 वर्ष का पूरा हो चुका है । मेहराज से मैंने कुछ पढ़ाई से संबंधित बातचीत करनी चाही तो मेहराज मुझे घर ले गया । मेहराज के घर ही हमने बात की । मेहराज ने नहीं पढ़ने का कारण बताया कि पिताजी शुरू से ही नहीं पढ़ाना चाहते थे क्योंकि वे स्वयं भी अनपढ़ हैं एवं मम्मी 10 वीं पढ़ी हुई है । वे पढ़ाना चाहती हैं । मम्मी-पापा दोनों ही मार्च-अप्रैल मे मोहर्रम देखने गांव (बिहार में) जाते थे। इस बीच हमारी यहां परीक्षा हो जाती थी । इस प्रकार 2-3 साल तो हुआ फिर पढ़ाई ही छुड़वा दी । मम्मी ने 2-3 बार नाम लिखवाया था पर मैं बड़ा हो गया था और छोटे लड़कों के साथ हर साल बैठना पड़ता था तब मैंने पढ़ाई छोड़ दी ।

मेहराज आजकल 4-5 महीने शुगर मिल में सीजन में मजदूरी कर लेता है। शुगर मिल में 8 घण्टे के 15 रुपये मिलते हैं । 8 घण्टे से ज्यादा काम करने पर 2500 से 3000 रुपये तक कमा लेता है।

मेहराज ने बताया कि वह बाकी बचे 7-8 महीने कोई काम नहीं करता, न ही घर के कामों में सहयोग देता है । कभी-कभार मम्मी के नहीं होने पर पानी भर देता है । बाजार से सामान भी पापाजी लाते हैं । आवश्यकता पड़ने पर ही कभी-कभी मेहराज सामान लेने जाता है ।

29 नवम्बर, 2001

मेहराज से कल शाम बात करते समय ही श्याम बहादुर से परिचय हुआ था जो मेहराज के घर के पास ही रहता है । श्याम से आज ही मिले। श्याम कृषि अनुसंधान केन्द्र में चपरासी है और महीने के 1200 रुपये मिलते हैं । श्याम के पिताजी शुगर मिल में कार्यरत हैं। उनके स्वास्थ्य की खराबी एवं सभी भाई-बहनों की पढ़ाई का खर्च अधिक होने के कारण श्याम ने पढ़ाई छोड़ी । श्याम बताता है कि स्कूल में कभी कॉपी नहीं होने के कारण, कभी पैन नहीं होने के कारण, कभी ड्रैस नहीं होने के कारण पिटाई होती थी। पिटाई के डर से श्याम ने स्कूल जाना बंद कर दिया। तब घर वालों ने कुछ भी नहीं कहा था । मां ने कुछ दिनों बाद स्कूल जाने को कहा था तब श्याम स्वयं नहीं गया।

श्याम अब भी पढ़ना चाहता है पर पढ़ाई करना शुरू करने से काम छोड़ना पड़ेगा जिसके कारण आर्थिक स्थिति (घर की) कमजोर होगी । श्याम बहादुर बताता है कि वह तो नहीं पढ़ा पर भाई के बच्चों को व अपने बच्चों को अवश्य पढ़ाएगा।

श्याम से बात करके मैं नरेश के पास गया तो नरेश का छोटा भाई टिंकू घर पर ही मिल गया । टिंकू ने बताया कि वह 16-17 वर्ष का है पर मुझे लगता है टिंकू 15 वर्ष के आसपास का ही है। टिंकू की मां ने बताया कि टिंकू 15 वर्ष का है । टिंकू रोजाना सुबह पापाजी के स्थान पर, जिनकी नगर परिषद में नौकरी है, नालियां साफ करने जाता है । टिंकू कहता है कि भैयाजी हम भी पढ़ लेते तो क्यों नालियां साफ करते, आपकी तरह रहते । वह स्कूल जाने में रोज ही लेट हो जाता था। स्कूल में देर से पहुंचने की सजा दी जाती थी। इस सजा के डर से टिंकू घर से स्कूल के लिए तो जाता था पर रास्ते में ही छिपकर गोलियां खेलने लग जाता था। गोलियाँ खेलकर टिंकू घर आ जाता । यही सिलसिला बहुत दिनों तक चला तो टिंकू का स्कूल से नाम कट गया । घर वालों ने समझाया तो भी टिंकू स्कूल जाने को तैयार नहीं हुआ क्योंकि अब ज्यादा पिटाई होने का डर था । इस प्रकार टिंकू ने पढ़ाई छोड़ दी। टिंकू की मां ने बताया कि टिंकू सारे दिन आवारागर्दी करता है सड़कों पर, घर का कोई काम नहीं करता है । टिंकू दूसरी कक्षा तक तो होशियार था फिर पता नहीं क्यों कमजोर होता चला गया । टिंकू से यह बातचीत भी दो बार में की गई । घर की छत डालने के लिए टिंकू काम भी करवा रहा था एवं बीच-बीच में बात भी कर रहा था ।

टिंकू 15 वर्ष का है । टिंकू रोजाना सुबह पापाजी के स्थान पर, जिनकी नगर परिषद में नौकरी है, नालियां साफ करने जाता है । टिंकू कहता है कि भैयाजी हम भी पढ़ लेते तो क्यों नालियां साफ करते, आपकी तरह रहते । वह स्कूल जाने में रोज ही लेट हो जाता था। स्कूल में देर से पहुंचने की सजा दी जाती थी। इस सजा के डर से टिंकू घर से स्कूल के लिए तो जाता था पर रास्ते में ही छिपकर गोलियां खेलने लग जाता था। गोलियाँ खेलकर टिंकू घर आ जाता । यही सिलसिला बहुत दिनों तक चला तो टिंकू का स्कूल से नाम कट गया ।

टिंकू स्वयं तो अब नहीं पढ़ना चाहता पर घर के बच्चों को जरूर पढ़एगा ताकि उनको टिंकू जैसा काम नहीं करना पड़े ।

जब टिंकू से मैने पूछा कि क्या आरक्षण मिलने से तुम्हें उम्मीद है कि आने वाले बच्चों को नौकरी मिल जायेगी ? तो टिंकू बोला, ''सरकारी नौकरी तो गरीबों को मिल ही नहीं सकती पर और कहीं काम तो मिल जायेगा।''

टिंकू से बातचीत करके नरेश के साथ पास के ही मकान में पहुंचे, यहाँ एक लड़की रहती है जो निरक्षर है । कभी स्कूल नहीं गई । नरेश मुझे यहाँ लाया। लड़की का नाम निर्मला है । निर्मला बहुत शर्माती है एवं निर्मला ने एक बार भी मेरी तरफ चेहरा करके बात नहीं की । निर्मला ने सभी बातों के कोई विस्तृत जबाव नहीं दिए। प्रपत्र के प्रश्न पर भी वह संक्षिप्त ही बोलती है । निर्मला ने बताया कि वह कभी स्कूल नहीं गई है क्योंकि घर वालों के पास किताबों के लिए, कपड़ों के लिए पैसे नहीं थे । वह घर का (सभी) सारा काम करती है। निर्मला कहती है कि घर वाले पढ़े होते तो पढ़ाते । वो तो स्वयं ही नहीं पढ़े हुए हैं । अब निर्मला पढ़ सकती है । पर मुझसे पूछती है कि क्या छोटी-छोटी लड़कियों के साथ पहली कक्षा में जाऊं ? वह बताती है अब तो पढ़ने में (पहली कक्षा से) शर्म आएगी ।

''साक्षरता के किसी कार्यक्रम में पढ़ी हो क्या ?'' तो बोली कोई नहीं पढ़ाता । मोहल्ले में दो-तीन लड़कियों को स्लेट किताबें मिली थी, पर अध्यापिका पढ़ाती ही नहीं थी, इसलिए उन्होनें ये चीजें अपने भाई-भतीजों को दे दी। पर निर्मला अपने बच्चों को अवश्य पढ़ाएगी ।

निर्मला कहती है परिवार में पढ़े लिखे हों तभी बच्चे पढ़ सकते हैं । तभी तो हम नहीं पढ़े ।

यहां से लौट कर मैं शुगर मिल की तरफ आ रहा था तो रास्ते में भवानी शंकर मिल गया । भवानी 7 वीं का विद्यार्थी है । भवानी ने बातचीत में बताया कि 15-16 वर्ष का एक लड़का है। उसके यहां चलते हैं । भवानी के साथ ही मैं श्यामलाल के यहां पहुंचा। श्यामलाल ने भी पढ़ाई छोड़ दी है । श्यामलाल बताता है कि 8 वीं करके पढ़ाई इसलिए छोड़नी पड़ी क्योंकि श्यामलाल को पिताजी के स्थान पर नगर परिषद के कार्य (सफाई) के लिए जाना होता था एवं यह कार्य सुबह का होता था। श्यामलाल का स्कूल भी प्रात: 7.30 से 12.30 तक का था । यहां श्यामलाल से मैंने प्रपत्र पर बात की । प्रपत्र पर बातचीत में श्यामलाल ने बताया कि घर खर्च तो ऊपर के काम से एवं घरों में सफाई करके चला लेते हैं एवं नगर परिषद की तनख्वाह लगभग बचाते ही हैं ।

30 नवम्बर, 2001

आज मैं सुबह जब बृजमोहन वाल्मीकि से बात कर रहा था तभी एक व्यक्ति मेरे पास आए । मुझसे कुछ बोले नहीं एवं बृजमोहन को एक तरफ ले गए । लगभग 4-5 मिनट बात की। 4-5 मिनट की क्या बात थी जब यह मैंने बृजमोहन से पूछा तो बृजमोहन ने बताया कि ये आपसे बात करना चाहते हैं। ये पूछ रहे थे कि क्यों आप लोग पूछताछ कर रहे हो ? बृजमोहन ने जब तक मुझे यह बताया तब तक वह व्यक्ति घर जा चुके थे। मैंने एक बार चाहा कि अभी जा कर मिल लें पर मैंने तुरन्त मिलना ठीक नहीं समझा । मैंने बृजमोहन को ही कहा कि तुम बात करके उनको बता देना कि मैं उनसे मिलने का इच्छुक हूं। बृजमोहन से बात करके मैं उसके साथ बृजमोहन के घर आ गया। यहां से हम दोनों चाय पीकर निकले । मैं ने बृजमोहन को बताया कि हमें जिन 30 लोगों से बात करनी है जो 14 से 16 वर्ष के हों उनमें लगभग 15 लड़कियां भी होनी चाहिए; तो बृजमोहन ने कहा-''भैया यहां आपको इतनी बड़ी लड़कियों से कोई भी बात नहीं करने देगा ।'' बृजमोहन ने दूर से बताया कि जहां स्वेटर सूख रहे हैं वहां दो लड़कियां रहती हैं । वहां आप बात कर लेना । मैं नहीं बोलूंगा । मैंने कहा-''ठीक है ।''

मैं एवं बृजमोहन उस घर में पहुंचे तो वहां लगभग 70 वर्ष की एक महिला मिली एवं सामने तीन लड़कियां एवं एक 10-12 वर्ष का लड़का बैठा था । ये सभी टी.वी. देख रहे थे। मैंने महिला से बात की तो उसने कहा कि हमारे तो सब पढ़े लिखे हैं, लिख लो आप तो । फिर बोली, ''जो पढ़ लिये उनको तो नौकरी दे दो। पढ़-पढ़ कर घर में पड़े हैं ।'' बृजमोहन ने कहा, ''चलो भैया।'' पर मैं थोड़ी देर और खड़ा रहा। मैं महिला की इन बातों से सहमत हुआ, ''हम पढ़ा रहे हैं , बहुत मुश्किल से । फिर पढ़ाकर कोई काम नहीं देते, न घर का काम करने लायक छोड़ते हैं । (बच्चों को) फिर पढ़ाने का क्या फायदा ?''

महिला ने मुझसे फिर 15-20 मिनट बात की । महिला ने बताया कि दो बार हमारे घर तोड़ दिए, कहां जायें, कहां पढ़ाएं । एक साल घर बनाने में लगता है, फिर तोड़ दिए जाते है । जब मैं बोला कि आपकी जो दिक्कत है वही तो लिखने आए हैं । तब महिला ने कहा कि हम कुछ लिखवाएंगे तो लड़का डांटता है, वो रात को आएगा, उसी से बात कर लेना ।

यहां से मैं एवं बृजमोहन करण के घर गए एवं वहां करण की बहन राजवीरो वाल्मीकि से बात की । राजवीरो ने बताया कि मैं रोज स्कूल जाती तो घर से स्कूल दूर होने के कारण समय पर नहीं पहुंच पाती और रोज स्कूल में डांटते या पिटाई होती । इसलिए स्कूल छोड़ी । मैंने पूछा कि स्कूल तो लगभग आधा कि.मी. ही है । अधिक दूर तो नहीं है । तो वो बोली कि घर वाले ही भेजते थे तभी तो जाती । ये टाइम का ध्यान नहीं रखते थे । फिर मैंने स्कूल जाना छोड़ा तब भी इन्होंने दुबारा भेजने का प्रयास नही किया। राजवीरो को नहीं पढ़ पाने के कारण पछतावा था ।

राजवीरो से बात करने के बाद मैं राजवीरो द्वारा बताए घर में गया। यहां सुनीता से बात की । सुनीता कृषि अनुसंधान केन्द्र के अन्दर बने आवास में रहती है। सुनीता की शादी 11-12 वर्ष की उम्र में ही हो गई थी । अभी तक ससुराल नहीं गई हैं । सुनीता के पिताजी ने कहा कि अब जल्दी ही ससुराल भेजेंगे । फरवरी तक भेजेंगे, फिर मुझे कहा कि आप भी आना । (ससुराल भेजने के समय यहां मुकलावा करते हैं, इसमें शामिल होने के लिए मुझे कहा ।)

सुनीता ने 8 वीं तक पढ़ाई की है एवं कक्षा 8 वीं में फैल होने का कारण पूछा तो बोली, ''दिसम्बर-जनवरी में किन्नू (संतरे) तोड़ते हैं । तब अर्द्धवार्षिक परीक्षा का समय होता है एवं मार्च-अप्रैल में गेहूं आदि फसल की कटाई व निकालने का समय होता है । इस प्रकार घर के कामों में हाथ बंटाना ही पड़ता है, इसलिए पढ़ाई नहीं होती।'' दुबारा 8 वीं क्यों नहीं पढ़ी ? पूछने पर पास ही बैठे उसके पिताजी बोले - ''क्या करना था पढ़कर, इनको क्या नौक़री करनी है ?'' इस पर सुनीता कुछ नहीं बोली ।

सुनीता ने कहा कि पढ़ने की बहुत इच्छा थी पर काम के कारण नहीं पढ़ सकी । जब मैंने पूछा कि स्कूल छोड़ने का निर्णय आप ही ने किया या आपके परिवार ने, तब-वह थोड़ी देर चुप रह कर बोली - ''मैंने ही किया।'' क्यों ? पूछने पर बोली - ''फैल होने के कारण।'' मैंने पूछा पर आपकी तो पढ़ने की इच्छा थी तब वह चुप होगई और कुछ नहीं बोली । सुनीता की बातों से लगा कि

सुनीता पढ़ना चाहती थी पर घर के कामों का अधिक होना एक बड़ा कारण बना। कृषि अनुसंधान केन्द्र में फसल के समय बहुत अधिक काम होता है । सुनीता के पिताजी विकलांग हैं इसलिए भी काम अधिक होगा । सुनीता का एक भाई है जो छोटा है । सुनीता से बात करके करण के साथ करणी सिंह मार्ग में ही एक और लड़की से बात करनी चाही पर संभव नहीं हुआ तो मैं एवं करण कुमार वाल्मीकि दोनों यहां से 3 कि.मी. दूर एक हवेली में गए । यहाँ करण के कुछ परिवार परिचित हैं । इन्हीं में से एक परिवार में बात की। यह मुस्लिम परिवार है । यहां लड़कियों को अन्दर ही रखते हैं । मुझसे सामने बैठ कर रुकसाना ने बात नहीं की । रुकसाना ने कहा, हमारे यहां पर्दा बहुत जरूरी होता है। इसलिए मैं बाहर ही बैठा रहा एवं रुकसाना अन्दर खड़ी रही । वहीं से जवाब दिए। मैंने रुकसाना की अम्मी से इस बारे में बात करने की कोशिश की तो बोली, आपको जो भी पूछना है ऐसे ही पूछ लो या फिर रहने दो । वैसे भी रुकसाना की अम्मी मुझसे बात ही नहीं करवाती अगर हमारे साथ करण वाल्मीकि नहीं होता । इस प्रकार रुकसाना से बात शुरू की । पर्दे के उस पार से बात करना मैंने अभी तक तो फिल्मों में ही देखा था या फिर आज यहां देख रहा हूं । जहां पर्दा तो नहीं पर अन्य प्रतीक हैं पर्दे के । रुकसाना के पिताजी सरकारी सेवा में हैं (आर्मी में) । रुकसाना के 4 भाई-बहन हैं । रुकसाना घर से बाहर नहीं आती-जाती । मैंने पूछा किसी पर्व पर किसी मेले पर या किसी मौके पर तो जाती होंगी ? तो बोली नहीं जाती । गंगानगर में बहुत बुरा माहौल है। हमारे समाज में लड़कियों को 5वीं से ज्यादा इसीलिए नहीं पढ़ाते । बड़ी लड़कियों को घर से निकालना अच्छा नहीं है । कभी-कभार रुकसाना के पिताजी ही ईद पर या अन्य अवसरों पर स्वयं ही लेकर जाते हैं । तभी बच्चे घर से बाहर निकलते हैं । रुकसाना की अम्मी ने बताया कि हम अब रुकसाना की शादी करेंगे । मैंने कहा कि अब तो सभी बचपन में शादी नहीं करते । लड़की बड़ी होने पर ही शादी करते हैं तो रुकसाना की मां बोली, ''तभी तो रोज उल्टी सीधी बातें होती हैं। मैं तो 13 साल की थी तब शादी हो गई थी।'' रुकसाना की मां बोल रही थी कि लड़की को 5वीं से अधिक पढ़ना ही नहीं चाहिए पर जब मैंने कहा कि भरतपुर की तहसील है कामां । वहां बहुत संख्या में मुस्लिम परिवार रहते हैं एवं वे तो अपनी बड़ी-बड़ी लड़कियों को भी मदरसे में पढ़ने भेजते हैं एवं वहां मैंने कई मदरसों में देखा है । सौ मदरसों से भी अधिक में। तब वह बोली - ''यहां पर मदरसे नहीं हैं ।'' मैं ने कहा - ''अगर मदरसे होते तो आप भेजती क्या ?'' तब बोली, ''जरूर भेजती । उर्दू आना तो जरूरी है हमारे मजहब में।'' मैंने पूछा, ''आपको आती है ?'' तब कहा- ''हां, तभी तो मैं चाहती हूं कि बच्चों को भी आये, पर यहां व्यवस्था नहीं है, हम जब इसके पापा की नौकरी पूरी हो जाएगी तब वापिस जाएंगे तो वहां (यू.पी) सब को उर्दू पढ़वायेंगे ।''

1 दिसम्बर 2001

कल 3ई छोटी कॉलोनी से लौटते समय करण से बात हुई थी इसलिए आज भी मैं सीधा करण के घर गया एवं उसे लेकर 3 ई पहुंचा । मेरे साथ करण एवं नरेश कक्षा 9 के दो विद्यार्थी थे । मैं नरेश के साथ एक छात्रा के घर गया जिसने इसी वर्ष 8 वीं कक्षा में पढ़ाई छोड़ी है। ये परिवार नरेश का परिचित है । छात्रा का नाम सुमन है, सुमन के पिताजी ड्राइवर है । सुमन की मां बताती है कि पहले हमारी स्वयं की गाड़ी थी, तब बहुत अच्छी कमाई होती थी । अब तो तनख्वाह ही आती है । सुमन की मां ने बताया कि मैंने बहुत ही मुश्किल से सुमन का स्कूल छुड़ाया है, क्योंकि मैं बीमार थी । चार कमरे हैं एवं झाड़ू-पोंछा के अलावा खाने का ही तो काम है। तब काम के कारण पढ़ाई थोड़ी छुड़ाई होगी आपने, क्योंकि ये पूरा काम तो 2-3 घन्टे का ही हुआ । ये करके 10 बजे स्कूल जाया जा सकता है एवं शाम को आकर काम किया जा सकता है, मैंने यह कहा तो उन्होंने कहा, ''पैसे भी नहीं थे और कोई साथ भी नहीं था । पर सुमन रोज रोती थी स्कूल जाने के लिए, अब भी जिद्द करती है। अबकी साल से इसे जरूर पढ़ायेंगे ।'' सुमन ने कहा कि वह इस समय पानी भरने, झाड़ू लगाने और बर्तन साफ करने का ही काम करती है बाकी पूरा काम मम्मी करती है । कभी कभार खाना बनाती हूं, तो सब्जी बनानी नहीं आती । सब्जी मम्मी ही बनाती है। सुमन बताती है कि वह अब भी घर में अखबार या कॉमिक्स आदि कुछ न कुछ पढ़ती रहती है । मैंने सुमन की मम्मी से सुमन को फीस नहीं होने पर सरकारी स्कूल में पढ़ाने को कहा तो बोली कि सरकारी स्कूल में कहां पढ़ाई होती है । वहां तो पास ही होना बहुत मुश्किल है। फिर सरकारी स्कूलों का माहौल भी खराब रहता है। मैं ने कहा कि गर्ल्स स्कूल में भेज दीजिए । तो बोलीं, ''क्या बतायें आपको, अभी थोड़े ही दिनों पहले वहां से 3-4 लड़कियां भाग गई थीं । तभी तो कह रही हूं कि माहौल खराब है और 3 ई से वह स्कूल दूर भी है ।''

सुमन से बात करके मैं 3 ई की गली नं. 9 में देवीलाल के घर पहुंचा । देवीलाल कक्षा 9 का शुगरमिल स्कूल का विद्यार्थी है । यहां पहुंचकर मैंने देवीलाल से बात की देवीलाल ने पास ही रहने वाले एक लड़के से मिलवाया। इसका नाम राजू है, राजू गैराज में काम करता है । राजू ने कहा कि पढ़ना तो चाहते थे, दो वर्ष तक लगातार स्कूल भी गये पर कुछ भी नहीं सीखे। मास्टर आता और खटिया मंगा कर सो जाता और हमारे हल्ले से आंख खुलती तो सबको मारता । हमसे छाछ मंगवा कर पी लेता। कभी कभी चाय

मंगवा लेता, फिर अन्ततः बहुत सारे बच्चे नहीं पढ़े । यहां पर राजू ने बताया कि मास्टर सारे दिन आस-पास के लोगों के घरों में जाकर बात करते रहते थे पर हमको दो वर्ष में 100 तक गिनती तक नहीं सिखा पाए । सबसे पहले मास्टर स्कूल में पढ़ायें, यह तो जरूरी होना चाहिए । राजू से बातचीत में लगा कि राजू अध्यापकों के कार्य से बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं है । राजू कहता है, ''सबसे मौज की सरकारी नौकरी है । आये दिन छुट्टी होती है । स्कूल जा कर आ जाओ और कोई काम नहीं करना होता, इनकी कोई जिम्मेदारी नहीं होती ।'' राजू दोपहर तक गैराज मे स्कूटर/मोटरसाइकिल की सर्विस करता है एवं प्रायः रोज की एक गाड़ी घर पर सर्विस करता है, उसके पैसे बच जाते हैं ।

राजू से बात करके हम (मैं एवं देवीलाल) पवन के घर गये। पवन ने इसी वर्ष स्वयं बीमार होने के कारण पढ़ाई छोड़ी है। पवन 9वीं कक्षा में था तभी उसको लगातार मिर्गी के दौरे पड़ने लगे, डॉक्टर को दिखाया तो डाक्टर ने पवन को न पढ़ने के लिए कहा ताकि दिमाग पर जोर न पड़े, इसलिए पवन ने पढ़ाई छोड़ी । पर पवन कहता है कि उसकी पढ़ने की बहुत इच्छा है । घर में पवन की मां भी उसके ना पढ़ पाने से परेशान है, क्योंकि पवन पढ़ाई में होशियार है एवं 8 वीं में प्रथम श्रेणी से पास हुआ है। परन्तु पवन अपनी बीमारी से बहुत डरता है मुझे कहता है कि अगर मैं पढूं और दिमाग पर जोर पढ़ने से पागल हो जांऊ तो मेरा बुरा हाल होगा इसलिए मैं नहीं पढ़ना चाहता, कम से कम ठीक से रह तो सकता हूं । पवन 8 वीं तक प्राइवेट स्कूल में पढ़ा एवं 9वीं में शुगरमिल स्कूल में एडमिशन लिया एवं 9वीं में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी । पवन से बात करके मैं देवीलाल के साथ वापिस लौट आया ।

यहां 12वीं कक्षा तक की गर्ल्स स्कूल से 3 लड़कियां भाग गई थीं, यह लगभग 10 माह पूर्व की बात है ।

2 दिसम्बर, 2001

मैं प्रेमा के घर आया । प्रेमा ने बताया कि पापा तो गंगानगर से बाहर रहते हैं इसलिए भैया-भाभी से ही बात करें । मैं प्रेमा के भाई से मिला । बातचीत के बीच प्रेमा की मां भी आ गई । प्रेमा के परिवार में 9 सदस्य हैं । प्रेमा के पिताजी बिजली विभाग में कर्मचारी है । प्रेमा के भैया एस.पी. के घर पर सफाई का काम करते हैं । प्रेमा के भाई को 1000/- रुपये महिने के मिलते हैं । प्रेमा की मां ने बताया कि स्कूल में मैडम कुछ नहीं पढ़ाती हैं, उल्टे बच्चों को मारती हैं इसलिए प्रेमा नहीं पढ़ पाई । प्रेमा की मां बताती है कि वह प्रेमा को पढ़ाना चाहती थी पर स्कूल के नाम से ही प्रेमा को नफरत हो गई थी । प्रेमा को हमने बहुत समझाया पर वह स्कूल नहीं गई । प्रेमा की मां ने कहा कि प्रेमा के बड़े भाई को भी पढ़ाने की कोशिश की पर वह भी 5 वीं तक ही पढ़ सका । फिर छठी के लिए शुगरमिल स्कूल में भेजा तो वह वहां नहीं पढ़ता था और स्कूल से भाग कर आ जाता था । अब तो बृजमोहन को ही पढ़ा रहे हैं । ये पढ़ ले, तो घर में कोई तो पढ़ा लिखा हो जाये । बृजमोहन 9वीं का छात्र है । यहां मैंने चाय पी एवं नाश्ता किया।

यहां बृजमोहन के साथ कई बार आ चुका हूं इसलिए यह पूरा घर परिचित है । यहां पर बात करके करण के घर गया एवं करण के साथ एक घर में गया जहां एक स्कूल छोड़ चुकी छात्रा रहती है, पर वह घर पर नहीं मिली । वह लकड़ियां लेने गई थी । मैं एवं करण वापिस आये एवं हम दोनों ही लक्ष्मी के यहां गये । यहां पर लक्ष्मी के दादाजी बैठे थे । थोड़ी देर लक्ष्मी के दादाजी से बात की। इसके बाद लक्ष्मी के घर लक्ष्मी के माता-पिता से बात की। लक्ष्मी की मां ने बताया कि वह सुबह-सुबह लक्ष्मी के साथ कुछ घरों में सफाई के लिए जाती है एवं कुछ घरों में कपड़े भी धोती है । उन्होंने बताया कि लक्ष्मी को स्कूल भेजने की कोशिश की, पर आस-पास से कोई लड़की पढ़ने नहीं जाती थी इसलिए ही लक्ष्मी भी नहीं गई। लक्ष्मी घर पर दोपहर में छोटे बच्चों के साथ रोज खेलती रहती है।

यहां जब लक्ष्मी की मां चाय बना रही थी तो लक्ष्मी ने बातों में ही बताया कि स्कूल की मैडम लक्ष्मी से रोजाना झाड़ू लगवाती थी। ऑफिस और कक्षाओं में सब जगह 4-5 लड़कियां झाड़ू लगाती थी, तो हाथ दर्द करने लग जाते थे। मैडम स्कूल में चाय-पानी के बर्तन साफ करवाती थी, पास के खेतों में भेज कर रोज खजूर मंगवाती थी, कभी किन्नू मंगवाती थी । ये सारे काम करवाने के बाद पढ़ाती भी नहीं थी । फिर कभी काम नहीं किया होता तो मारती थी । इसलिए जो लड़कियां जाती थीं, उनमें से लक्ष्मी एवं पास में रहने वाली रीना ने स्कूल छोड़ दिया । घर वालों ने स्कूल भेजने की कोशिश की, पर ये नहीं गई । फिर जब नगर परिषद् ने इनके मकान तोड़ दिये तब आस-पास की कोई लड़की भी स्कूल जाने के लिए नहीं मिली । बच्चे घर बनाने के काम में मदद करते थे। लक्ष्मी से बातें कर रहे थे तब तक लक्ष्मी की मां चाय लेकर आ गई । उनसे स्कूल की पढ़ाई के बारे में पूछा तो बोलीं, ''वे लोग पढ़ायें या न पढ़ायें उनको तो तनख्वाह मिल ही जायेगी, तब वे क्यूं पढ़ायेंगे ।'' ◆